आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:19-11-14

हमें सत्य स्वरूप आत्मा की पहचान देकर, सत्यता की सच्ची श्रीमत् देने वाले, सत बाप ने कहा, मीठे बच्चे - स्वयं की माया से रक्षा करने के लिए सदा सत्यता पर चलो. अगर अन्दर में कोई भी झूठ होगा तो माया अंगूरी मार देती है.

हम ब्राह्मण अभी पुरुषार्थ कर रहे है - स्वयं को मुक्ति और जीवन-मुक्ति प्राप्त कराने का. आत्मा को मुक्ति भी तब मिलती है जब उसके सभी कर्म-बन्धनो के हिसाब-किताब चुकतु हो जाये. आत्मा के सभी कर्म-बन्धनो से मुक्ति के लिए उसे सत्यता के राह पर चलना होता हैं. सत बाप ने हमें श्रीमत् दी है कि सदा स्वयं से और एक बाप से सदा के लिए सच्चा रहो. माया से बचने के लिए हमें अपने आप को सत्यता के पल्ले पर रख, हमारे अन्दर झांकना है और चेक करना है कि हमारे में कोई भी बात में छोटा सा भी झूठ तो नहीं. अगर हमारे में सूक्ष्म में कोई झूठ है तो माया से जितना मुश्किल हो सकता है इसलिए अपने आप को सत्यता के तराजू पर चेक करना बहुत जरूरी है. ऐसा ना हो कि इतना तो चलता है, यह तो सब में होता ही है. अगर हमारे से कोई झूठ हो रहा है तो उसे बाप के सामने जाकर कनफ़ैशन करना भी इतना ही जरूरी है. कनफ़ैशन करने से बाप कोई ने कोई रास्ता जरूर निकालेंगे.

बाबा की श्रीमत् माना बाबा जो हमें हर रोज मुरली ओ के द्वारा नयी-नयी बाते बताते है उस को सुनना, उस को मानना और उस पर ही चलना.

आज की मुरली में कही गई कुछ श्रीमत् -

- बाप में और ड्रामा में निश्चय

१. बच्चों में यह निश्चय है कि परमात्मा, रुहानी बाप स्वयं हमें ब्रह्मा तन के द्वारा पढ़ाते हैं. शास्त्रों में लिखा है ऐसे भगवान आकाशवाणी या शक्ति वा प्रेरणा नहीं देते. हम आत्माये मूलवतन में बाप के साथ रहती है फिर वहॉ से नम्बरवार पार्ट बजाने यहॉ आती हैं. हम आत्माये अपने बाप से बहुत टाइम से बिछुडी हुई हैं. इस पर ही गायन है "आत्मा परमात्मा अलग रहे बहु काल..." आत्मा सो परमात्मा कहना अज्ञान हैं.

२. यह सृष्टि चक्र का ड्रामा ५ हजार वर्ष का हैं. हम आत्माये इस चक्र में सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है या कहे पुण्य आत्मा से पाप आत्मा बनती हैं.

३. सभी देहधारीओ को देवी-देवता कहा जाता है. कृष्ण को फादर नहीं कहेंगे. सभी आत्माओं का बाप तो एक निराकार बाप को ही कहा जाता हैं. यह प्रजापिता ब्रह्मा भी उन्हें फादर कहते है.

४. बाप अभी हमें जो श्रीमत् देते है उस पर पुरा चलना है. नहीं तो फेल हो जायेंगे तो सतयुग की जगह त्रेता में आना पड़ेगा.

५. कल तुम जिस शिव की पूजा करते थे वही तुम्हें आज पढ़ा रहे है. भगवान सर्वव्यापी नहीं है.

६. सतयुग के सुख है ही भारत के भाग्य में. बाकी दुनिया वाले आते ही बाद में है, जब भारत में भक्ति मार्ग शुरु होता है. जब भारतवासी गिरते है तब बाकी धर्म वाले नम्बरवार आते है. भारत गिरते-गिरते एक दम पट पर आ जाता है. फिर भारत वापस चड़ता है.

- पतित-पावन बाप है.

१. बाप कहते है मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जाएं. लास्ट ६३ जन्मो से रावण राज्य में हमारे पाप बहुत चढ़े हुए है वह एक बाप की याद से ही खत्म होने है. पाप आत्मा से पुण्य आत्मा भी एक बाप की याद से ही बनेंगे.

- परमात्मा का कार्य.

१. बाप का कार्य है बच्चों को शांतिधाम और सुखधाम का रास्ता बताना.

ॐ शांति.